

# SPIS TREŚCI

|        |                                    |     |
|--------|------------------------------------|-----|
|        | PRZEDMOWA                          | 7   |
|        | CZĘŚĆ I                            | 13  |
| I.     | NARODZINY I POKREWIEŃSTWA          | 15  |
| II.    | DZIECIŃSTWO                        | 18  |
| III.   | MAŁŻEŃSTWO DZIECIĘCE               | 20  |
| IV.    | ZABAWA W „MAŁŻONKA”                | 23  |
| V.     | W LICEUM                           | 26  |
| VI.    | TRAGEDIA                           | 30  |
| VII.   | TRAGEDIA (CIAĞ DALSZY)             | 33  |
| VIII.  | KRADZIEŻE I SKRUCHY                | 37  |
| IX.    | ŚMIERĆ OJCA I MOJA PODWÓJNA HAŃBA  | 40  |
| X.     | NIECO O RELIGII                    | 42  |
| XI.    | PRZYGOTOWANIA DO WYJAZDU DO ANGLII | 47  |
| XII.   | WYKLĘTY                            | 51  |
| XIII.  | NARESZCIE W LONDYNIE               | 53  |
| XIV.   | MÓJ WYBÓR                          | 57  |
| XV.    | UDAJĘ ANGIELSKIEGO DŻENTELMENA     | 60  |
| XVI.   | ZMIANY                             | 63  |
| XVII.  | MOJE DOŚWIADCZENIA Z ODŻYWIANIEM   | 66  |
| XVIII. | NIEŚMIAŁOŚĆ JEST MOJĄ TARCZĄ       | 69  |
| XIX.   | RAK NIEPRAWOŚCI                    | 73  |
| XX.    | ZAWIERAM ZNAJOMOŚĆ Z RELIGIAMI     | 77  |
| XXI.   | <i>NIRBAL KE BALA RAMA</i>         | 80  |
| XXII.  | NARAJAN HEMĆANDRA                  | 82  |
| XXIII. | WSZECHŚWIATOWA WYSTAWA             | 86  |
| XXIV.  | „NOMINACJA” – I CO DALEJ?          | 88  |
| XXV.   | MOJA BEZRADNOŚĆ                    | 90  |
|        | CZĘŚĆ II                           | 95  |
| I.     | RAJĆANDBHAI                        | 97  |
| II.    | JAK ROZPOCZĄŁEM ŻYCIE              | 100 |

|         |                                                |     |
|---------|------------------------------------------------|-----|
| III.    | PIERWSZA SPRAWA                                | 103 |
| IV.     | PIERWSZY WSTRZĄS                               | 107 |
| V.      | PRZYGOTOWANIA DO WYJAZDU DO AFRYKI POŁUDNIOWEJ | 110 |
| VI.     | PRZYBYCIE DO NATALU                            | 112 |
| VII.    | NIEKTÓRE Z MOICH DOŚWIADCZEŃ                   | 116 |
| VIII.   | W DRODZE DO PRETORII                           | 119 |
| IX.     | DALSZE CIĘŻKIE PRZEJŚCIA                       | 123 |
| X.      | PIERWSZY DZIEŃ W PRETORII                      | 128 |
| XI.     | SPOTKANIA Z CHRZEŚCIJANAMI                     | 132 |
| XII.    | W POSZUKIWANIU KONTAKTÓW Z INDUSAMI            | 135 |
| XIII.   | CO TO ZNACZY BYĆ „KULISEM”?                    | 138 |
| XIV.    | PRZYGOTOWANIA DO PROCESU                       | 141 |
| XV.     | FERMENT RELIGIJNY                              | 144 |
| XVI.    | CZŁOWIEK STRZELA — PAN BÓG KULE NOSI           | 148 |
| XVII.   | OSIEDLAM SIĘ W NATALU                          | 150 |
| XVIII.  | „NIE DLA KOLOROWYCH”                           | 154 |
| XIX.    | KONGRES INDYJSKI W NATALU                      | 157 |
| XX.     | BALASUNDARAM                                   | 161 |
| XXI.    | TRZYFUNTOWY PODATEK                            | 164 |
| XXII.   | STUDIA PORÓWNAWCZE NAD RELIGIAMI               | 167 |
| XXIII.  | PROWADZĘ WŁASNE GOSPODARSTWO                   | 170 |
| XXIV.   | DO DOMU                                        | 173 |
| XXV.    | W INDIACH                                      | 175 |
| XXVI.   | DWIE NAMIĘTNOŚCI                               | 179 |
| XXVII.  | WIEC W BOMBAJU                                 | 183 |
| XXVIII. | PUNA I MADRAS                                  | 186 |
| XXIX.   | WRACAĆ NATYCHMIAST!                            | 188 |
|         | CZĘŚĆ III                                      | 193 |
| I.      | POMRUKI BURZY                                  | 195 |
| II.     | BURZA                                          | 197 |
| III.    | PRÓBA                                          | 200 |
| IV.     | USPOKOJENIE PO BURZY                           | 205 |
| V.      | WYCHOWANIE DZIECI                              | 208 |

|        |                                         |     |
|--------|-----------------------------------------|-----|
| VI.    | W DUCHU SŁUŻBY DLA INNYCH               | 210 |
| VII.   | <i>BRAHMAĆARJA</i> – I                  | 213 |
| VIII.  | <i>BRAHMAĆARJA</i> – II                 | 216 |
| IX.    | ŻYCIE W PROSTOCIE                       | 220 |
| X.     | WOJNA Z BURAMI                          | 222 |
| XI.    | REFORMA SANITARNA I POMOC PODCZAS GŁODU | 225 |
| XII.   | POWRÓT DO INDII                         | 227 |
| XIII.  | ZNÓW W INDIACH                          | 230 |
| XIV.   | URZĘDNIK I OPIEKUN                      | 233 |
| XV.    | NA KONGRESIE                            | 235 |
| XVI.   | PRZYJĘCIE U LORDA CURZONA               | 237 |
| XVII.  | MIESIĄC Z GOKHALEM – I                  | 238 |
| XVIII. | MIESIĄC Z GOKHALEM – II                 | 241 |
| XIX.   | MIESIĄC Z GOKHALEM – III                | 244 |
| XX.    | W BENARESIE                             | 247 |
| XXI.   | CZY OSIEDLIĆ SIĘ W BOMBAJU?             | 251 |
| XXII.  | WIARA WYSTAWIONA NA PRÓBĘ               | 253 |
| XXIII. | ZNÓW DO AFRYKI POŁUDNIOWEJ              | 256 |
|        | CZĘŚĆ IV                                | 259 |
| I.     | „STRACONE ZACHODY MIŁOŚCI”              | 261 |
| II.    | SAMOWŁADCY Z AZJI                       | 263 |
| III.   | PRZEŁKNIĘTA OBELGA                      | 265 |
| IV.    | OŻYWCZY DUCH POŚWIĘCENIA                | 267 |
| V.     | REZULTATY WEJRZENIA W SIEBIE            | 269 |
| VI.    | OFIARA NA RZECZ WEGETARIANIZMU          | 272 |
| VII.   | LECZENIE WODĄ I ZIEMIĄ                  | 274 |
| VIII.  | OSTRZEŻENIE                             | 276 |
| IX.    | POTYCZKI Z WŁADZAMI                     | 279 |
| X.     | ZBOŻNE WSPOMNIENIE I POKUTA             | 281 |
| XI.    | BLISKIE KONTAKTY Z EUROPEJCZYKAMI       | 284 |
| XII.   | KONTAKTY EUROPEJSKIE (DALSZY CIĄG)      | 287 |
| XIII.  | „INDIAN OPINION”                        | 289 |
| XIV.   | „REZERWATY” DLA KULISÓW CZY GETTA?      | 292 |

|          |                                               |     |
|----------|-----------------------------------------------|-----|
| XV.      | DŻUMA – I                                     | 294 |
| XVI.     | DŻUMA – II                                    | 297 |
| XVII.    | „REZERWAT” W PŁOMIENIACH                      | 299 |
| XVIII.   | CZAROWNY UROK KSIĄŻKI                         | 301 |
| XIX.     | OSADA PHOENIX                                 | 304 |
| XX.      | PIERWSZA NOC                                  | 306 |
| XXI.     | POLAK WPRZĘGA SIĘ DO PRACY                    | 308 |
| XXII.    | NAD KIM CZUWA BÓG                             | 310 |
| XXIII.   | RZUT OKA NA ŻYCIE RODZINNE                    | 314 |
| XXIV.    | REBELIA ZULUSÓW                               | 316 |
| XXV.     | WEWNĘTRZNY NIEPOKÓJ                           | 319 |
| XXVI.    | NARODZINY SATJAGRAHY                          | 322 |
| XXVII.   | NIECO WIĘCEJ PRÓB W DZIEDZINIE ODŻYWIANIA SIĘ | 323 |
| XXVIII.  | ODWAGA KASTURBAI                              | 325 |
| XXIX.    | DOMOWA SATJAGRAHA                             | 329 |
| XXX.     | DROGA KU POWŚCIĄGLIWOŚCI                      | 331 |
| XXXI.    | POST                                          | 333 |
| XXXII.   | DYREKTOR SZKOŁY                               | 336 |
| XXXIII.  | WPAJANIE OGÓLNYCH WIADOMOŚCI                  | 339 |
| XXXIV.   | SZKOLENIE DUCHOWE                             | 341 |
| XXXV.    | CHWASTY                                       | 343 |
| XXXVI.   | POST JAKO POKUTA                              | 344 |
| XXXVII.  | NA SPOTKANIE Z GOKHALEM                       | 347 |
| XXXVIII. | MÓJ UDZIAŁ W WOJNIE                           | 349 |
| XXXIX.   | ZAGADNIENIE MORALNE                           | 351 |
| XL.      | SATJAGRAHA W MINIATURZE                       | 353 |
| XLI.     | MIŁOSIERDZIE GOKHALEGO                        | 357 |
| XLII.    | LECZENIE ZAPALENIA OPŁUCNEJ                   | 359 |
| XLIII.   | POWRÓT DO DOMU                                | 361 |
| XLIV.    | KILKA UWAG NA TEMAT ADWOKATURY                | 363 |
| XLV.     | CZY TO BYŁ NIEROZWAŻNY KROK?                  | 365 |
| XLVI.    | KLIENCI STAJĄ SIĘ WSPÓŁPRACOWNIKAMI           | 367 |
| XLVII.   | JAK URATOWAŁEM PEWNEGO KLIENTA                | 369 |

|         |                                           |     |
|---------|-------------------------------------------|-----|
|         | CZĘŚĆ V                                   | 373 |
| I.      | PIERWSZE DOŚWIADCZENIA                    | 375 |
| II.     | Z GOKHALEM W PUNIE                        | 377 |
| III.    | CZY TO BYŁA GROŻBA?                       | 379 |
| IV.     | SANTINIKETAN                              | 382 |
| V.      | NIEDOLE PASAŻERÓW TRZECIEJ KLASY          | 385 |
| VI.     | CZY WSTĄPIĆ DO STOWARZYSZENIA             | 387 |
| VII.    | KUMBHA MELA                               | 389 |
| VIII.   | LAKSZMAN DŻHULA                           | 393 |
| IX.     | ZAŁOŻENIE AŚRAMU                          | 396 |
| X.      | POMIĘDZY MŁOTEM A KOWADŁEM                | 398 |
| XI.     | ZNIESIENIE SYSTEMU KONTRAKTOWEJ EMIGRACJI | 401 |
| XII.    | PLAMA Z INDYGO                            | 405 |
| XIII.   | SZLACHETNI RODACY Z BIHARU                | 408 |
| XIV.    | OKO W OKO Z AHIMŚĄ                        | 411 |
| XV.     | SPRAWA ZOSTAJE UMORZONA                   | 414 |
| XVI.    | METODY PRACY                              | 417 |
| XVII.   | TOWARZYSZE                                | 419 |
| XVIII.  | BADAM ŻYCIE WSI                           | 421 |
| XIX.    | GDY GUBERNATOR JEST DOBRY                 | 423 |
| XX.     | KONTAKTY Z ROBOTNIKAMI                    | 425 |
| XXI.    | POBIEŻNY RZUT OKA NA AŚRAM                | 427 |
| XXII.   | GŁODÓWKA                                  | 429 |
| XXIII.  | AKCJA SATJAGRAHA W KHEDZIE                | 433 |
| XXIV.   | „ZŁODZIEJ CEBULI”                         | 435 |
| XXV.    | KONIEC AKCJI SATJAGRAHA W KHEDZIE         | 437 |
| XXVI.   | DĄŻENIE DO ZJEDNOCZENIA                   | 439 |
| XXVII.  | AKCJA WERBUNKOWA                          | 442 |
| XXVIII. | NA PROGU ŚMIERCI                          | 449 |
| XXIX.   | USTAWY ROWLATTA I MOJA ROZTERKA           | 453 |
| XXX.    | WSPANIAŁE WIDOWISKO                       | 456 |
| XXXI.   | NIEZAPOMNIANY TYDZIEŃ – I                 | 459 |
| XXXII.  | NIEZAPOMNIANY TYDZIEŃ – II                | 464 |
| XXXIII. | POMYŁKA HIMALAJSKA                        | 467 |

|          |                               |     |
|----------|-------------------------------|-----|
| XXXIV.   | „NAVAJIVAN” I „YOUNG INDIA”   | 469 |
| XXXV.    | W PENDŻABIE                   | 472 |
| XXXVI.   | KALIFAT I SPRAWA OCHRONY KRÓW | 475 |
| XXXVII.  | KONGRES W AMRITSARZE          | 480 |
| XXXVIII. | MÓJ DEBIUT W KONGRESIE        | 483 |
| XXXIX.   | NARODZINY <i>KHADI</i>        | 485 |
| XL.      | NARESZCIE ZNALEZIONY          | 488 |
| XLI.     | POUCZAJĄCY DIALOG             | 490 |
| XLII.    | FALA PRZYBIERA!               | 493 |
| XLIII.   | W NAGPURZE                    | 497 |
|          | POŻEGNANIE                    | 499 |